विज्ञापन या सूचनाएं

अपने ग्राहकों को बुलाने के लिए एक चने बेचने वाला ये आवाज़ लगाता है–

ताज़े करारे चने
चटपटे मसालेदार
गरम मज़ेदार चने
ऐसे चने मायके में भी न मिलेंगे।

संतरे वाला संतरे बेचने के लिए बाज़ार में यूँ चिल्लाता है

ताज़े ताज़े संतरे
बड़े बड़े संतरे
नागपुर के संतरे
दो रुपये के छह हो गए
इससे सस्ते अब नहीं होंगे

तुमनें अखबार में या फिर सड़क पर चलते हुए दीवारों पर ऐसे चित्र देखे होंगे–

कुछ संदेश ऐसे भी देखे होंगे–

गुरू करो जान कर पानी पियो छान कर

या कुछ सूचनाएं जो सभी लोगों तक पहुंचानी हों, जैसे–

पल्स पोलियो अभियान, 6 जनवरी 1997
यदि आप के घर में 3 साल की आयु से कम का कोई बच्चा है
तो उसके स्वस्थ, खुशहाल जीवन के लिए उसे पोलियो से मुक्त कराएं।
उसे 6 जनवरी को पोलियो की दवा अवश्य दिलाएं।

ये सब तुमने रेडियो और टी.वी पर भी देखा सुना होगा।

इनको हम विज्ञापन कहते हैं। जब हमें किसी चीज़, सूचना या फिर संदेश की ओर सबका ध्यान खींचना होता हैं, तब हम विज्ञापन का उपयोग करते हैं। विज्ञापन का उद्देश्य होता है लोगों का ध्यान आकर्षित करना। इस कारण से विज्ञापन में ऐसे शब्द और चित्रों को रखा जाता है जिससे कि अधिक से अधिक विशेषताएँ पता चल सकें, मुख्य बातों पर ध्यान जाए। कुछ विज्ञापनों में, जहाँ से कोई वस्तु या सेवा प्राप्त की जा सके, उस जगह का नाम, पता भी दिया जाता है, उनका मूल्य भी बताया जाता है।

◉ तुम्हारे आसपास, दीवारों पर या सड़कों के किनारे, तुमने किन चीज़ों के विज्ञापन या सूचनाएं या संदेश देखे हैं?

◉ अखबार या टी.वी पर कौन–कौन से विज्ञापन देखे–सुने हैं?

◉ तुम्हें सबसे अच्छा विज्ञापन कौन सा लगता है? ये विज्ञापन तुम्हें क्यों अच्छा लगा?

तुम भी कोरा कागज़ या कार्ड शीट लेकर कुछ विज्ञापन बनाओ– चीज़ें बेचने के जैसे, जूते, कपड़े, चाय; या संदेश या सूचना के जैसे, साफ पानी या आने वाले मेले के बारे में।

विज्ञापन में ऐसे शब्द और चित्र होने चाहियें जिनसे उस चीज़ या उस बात की खास–खास विशेषताओं के बारे में पता चले।

◉ अपने स्कूल के बारे में सूचना देते हुए एक पोस्टर बनाओ।

सुखनराम की भैंसी

सुखनराम की भैंसी ने
दे घुमाई पूंछ
बीच में आ गई, जाने कैसे
चाचाजी की मूंछ।
गोबर पोंछा, मिट्टी पोंछी,
चाचाजी चिल्लाए
दो धाप और भैंसी ने
इतने में जमाए

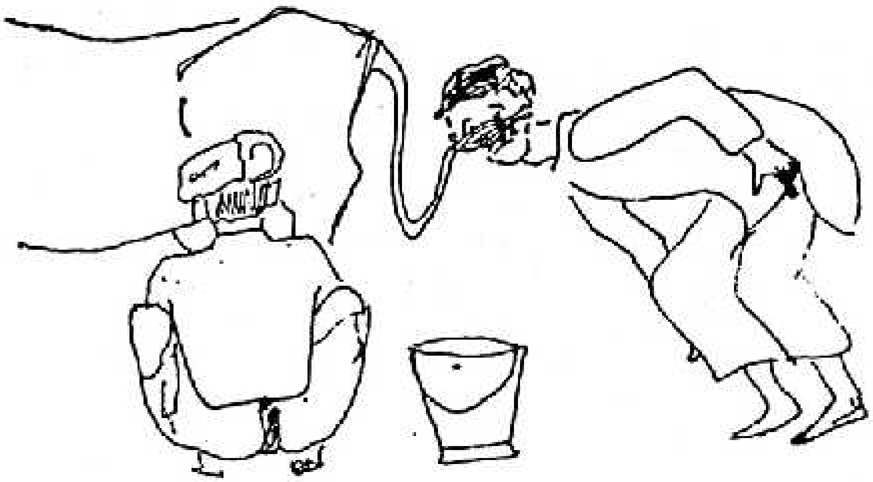

चाचाजी (*गुस्से में*) - सुखनराम, तेरी भैंसी को ज़रा तमीज़ सिखा। सारे मुंह में गोबर कर दिया!

सुखनराम - अरे चाचाजी, इसमें उसका क्या दोष। भैंसी तो सिर्फ अपनी पूंछ घुमा रही थी। वह तो आप ही बीच में घुस आए।

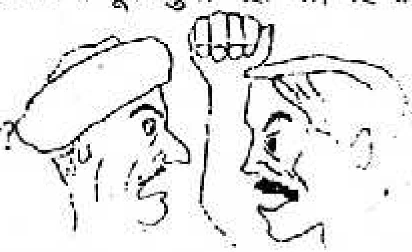

चाचाजी - क्या मतलब, हम देखेंगे नहीं कि तुम कैसे दुह रहे हो?

सुखनराम - वही तो मैंने कहा था, आप ही बीच में घुस आए।

चाचाजी - तेरी इतनी बड़ी-सी भैंस को क्या पता नहीं कि जब कोई पीछे खड़ा हो तो पूंछ नहीं घुमाना चाहिए?

सुखनराम (*हंसकर*) - भैया भैंसी का काम है दूध देना और पूंछ हिलाना। अगर आपको नहीं मालूम तो वह क्या करे?

चाचाजी (*और गुस्से में*) - जानवर की तरफदारी करता है, बेशरम कहीं का! ज़रा मेरा डंडा तो लाना, भैंसी की वो धुनाई करता हूं कि याद रखेगी।

सुखनराम - देखो चाचाजी, हम कहे दे रहे हैं, भैंसी को हाथ मत लगाना।

चाचाजी - अरे हट रे, बड़ा आया है। भैंसी तो क्या, तेरी भी धुनाई कर दूंगा।

सुखनराम - (*वह भी गुस्से में*) देखो चाचा, जबान संभाल कर बात करो। नहीं तो मुझसे बुरा कोई और नहीं होगा।

चाचाजी - अरे क्या कर लेगा तू? ज़रा कर के तो बता।

सुखनराम - चाचा, सच बोल रहा हूं, ठीक नहीं होगा।

चाचाजी - जो करना है करके देख लो।

(*सुखनराम अचानक लपक कर चाचाजी की मूंछ खींचता है। मूंछ झट से उसके हाथ में आ जाती है।*)

सुखनराम - अरे यह क्या! चाचा आपकी मूंछ! अरे यह मैंने **क्या** कर दिया। बड़ा पाप हो गया यह तो। अरे यह मैंने क्या कर दिया!

चाचाजी (*सुखनराम को देखकर हंस रहे हैं। लोटपोट होते जा रहे हैं। बड़ी मुश्किल से बोलते हुए*) - ज़रा उन मूछों को तो देखो।

सुखनराम - (*अपने हाथ में रखी मूंछों को आश्चर्य से देखते हुए*) यह तो... यह तो... नकली हैं।

चाचाजी (*अभी भी हंसते हुए*) - देख लिया ना, बड़े आए थे कुछ करने वाले।

सुखनराम (*धीरे-धीरे उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आती हुई*) - वाह चाचाजी, खूब बेवकूफ बनाया आपने। मैं तो मान ही गया था कि मैंने असली मूंछ उखाड़ दी।

चाचाजी - असली मूंछ तुमसे उखाड़ते ही कहां बनती।

सुखनराम (*नकली गुस्सा दिखाते हुए*) - ऐसी बात है? तो अभी बताता हूं।

चाचाजी (*नकली घबराहट दिखाते हुए*) - अरे भैया, क्या कर रहे हो। अभी नहीं, जब अगला झगड़ा होगा तब दिखाना।

1. - चाचाजी और सुखनराम के बीच झगड़ा क्यों हुआ?
   - गलती किसकी थी?
   - अगर भैंस पूंछ की बजाय सींग से मारती तो क्या होता?
   - अगर चाचाजी की असली मूंछ होती तो क्या होता?
   - क्या सुखनराम और चाचाजी सही में लड़ रहे थे?

2. इस नाटक को अपने मन में ध्यान से पढ़ो। अब कोई एक चाचाजी बन जाए, और एक सुखनराम। दोनों मिलकर नाटक को ज़ोर से पढ़ो, हाव-भाव के साथ। चाचाजी का डायलॉग वह पढ़े जो चाचाजी बना है। सुखनराम का डायलॉग वह पढ़े जो सुखनराम बना है। जब चाचाजी गुस्सा करेंगे तो गुस्से से बोलना है। बारी-बारी से सभी ये नाटक खेल सकते हैं।

3. सुखनराम एक दूधवाला है। उसके पास 10 भैंसे हैं। आम तौर पर 10 में से 6-8 मवेशी दूध देते हैं। इस तरह उसके यहां रोज़ करीब 22 से 25 लीटर दूध हो जाता है। वह 10 रुपए लीटर दूध बेचता है।

   उसे रोज़ शहर ले जाकर दूध बेचना पड़ता है। उसके 6 बंदी के ग्राहक हैं जिनका हिसाब वह महीने से करता है। बाकी दूध वह होटल को बेचता है, फुटकर में। एक दिन में वह 20 लीटर दूध तो बेच ही लेता है।

   सुखनराम के घर पर महीने में लगभग कितना दूध हो जाता होगा (सबसे पास के 100 लीटर तक बताओ)?

   महीने भर में उसकी आमदनी लगभग कितनी हो जाती होगी (सबसे पास के 100 रुपए तक बताओ)?

   यदि सभी जानवरों का महीने भर का कुल खर्च लगभग 400 रुपए तक होता है, तो सुखनराम को एक महीने में कितना फायदा होता होगा?

4. ● दूध, पानी, तेल जैसी कोई भी तरल चीज़ (जो बह सकती है) लीटर के पैमाने (यानी एक बर्तन जिसमें एक लीटर या आधा या पाव लीटर आता हो) से नापी जाती है।

   एक दिन सुखनराम के पास 3 लीटर और 5 लीटर के पैमाने थे। एक ग्राहक ने उससे एक लीटर दूध मांगा।

सुखनराम ने थोड़ा सर खुजलाया - कैसे नापूं?

चाचाजी पास में ही खड़े थे। बोले - 3 लीटर का पैमाना भरकर 5 लीटर वाले में डालो। अब उसमें दो ही लीटर दूध और आएगा। फिर से 3 लीटर वाले पैमाने को भरकर डालो। अब, 3 लीटर वाले पैमाने में बचा दूध 1 लीटर है। वह ग्राहक को दे दो।

अब तुम बताओ सुखनराम ने इन दो ही पैमानों से 2 लीटर दूध कैसे नापा होगा?

4 लीटर दूध कैसे नापा होगा? और 6 लीटर दूध कैसे नापा होगा?

5. यह तिकड़म करने में सुखनराम रोज़ परेशान होता था। उसने एक आधा लीटर का पैमाना और खरीद लिया। अब बताओ एक लीटर दूध नापने के लिए उसे कितनी बार आधा लीटर दूध नापना पड़ेगा?

   2 लीटर के लिए कितनी बार? 4 लीटर वह अब कैसे नापेगा? 6 लीटर अब कैसे नापेगा?

   ● क्या वह पाव भर दूध नाप सकता है?

6. तुम्हारे मोहल्ले/गांव में कोई दूध बेचने वाला है? उससे पता करो कि उसके पास कितने मवेशी हैं?

   गाय - भैंस -

   उसके यहां रोज़ कितना दूध होता है? वह दूध कहां-कहां बेचता है?

   वह एक लीटर दूध कितने में बेचता है? महीने भर में उसके यहां कितना दूध हो जाता है?

   इन मवेशियों पर उसका कितना खर्च हो जाता है? उसे कितना फायदा होता है?

7. नीचे मैंने एक ही मतलब वाले कुछ शब्द दिए हैं। उन्हें ध्यान से पढ़ो।

धुनाई	-	पिटाई	लपककर	-	कूदकर
आश्चर्य	-	अचरज	उल्लू बनाया	-	बेवकूफ बनाया

इनमें से कुछ शब्द नाटक में भी आए हैं। उन्हें ढूंढ कर उन पर निशान लगाओ। वे वाक्य पढ़ो जिनमें ये शब्द आए हैं। इन शब्दों से और वाक्य बनाओ।

अब कुछ उल्टे अर्थों वाले शब्द दिए गए हैं।

मुश्किल	-	आसान	बडी	-	छोटी
शर्मीला	-	बेशरम	झट से	-	धीरे से
असली	-	नकली			

इनके उल्टे अर्थ लिखो -

मोटा	-	गरम	-
बेवकूफ	-	महंगा	-
नरम	-		

● तुम और बनाओ।

9. तरल चीज़ों (दूध, पानी, तेल आदि) की कॉपी में सूची बनाओ। इनमें कौन-कौन सी समान बातें हैं (जैसे यह सब बह सकते हैं)?

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. इन शब्दों से वाक्य बनाओ–

तरफ़दारी --

बेशरम --

2. नीचे दिए गए शब्दों में अक्षरों को उलट देने से एक नया शब्द बनता है। इन शब्दों को उलटकर शब्द बनाओ। जैसे–

	उलटा	अर्थ		उलटा	अर्थ
ज़रा	राज़	-----	राम	-----	-----
तरी	-----	-----	पता	-----	-----
रहा	-----	-----	नाम	-----	-----
लाना	-----	-----	जाम	-----	-----

3. कई वस्तुएं ऐसी हैं जो एक होती हैं तो उसे अलग ढंग से बोलते है और एक से अधिक होने पर अलग ढंग से जैसे–

डंडा डंडे डंडों	शाला शालाएँ शालाओं	बाल्टी बाल्टियाँ बाल्टियों	टाँग ---- ----
बच्चा बच्चे बच्चों	गाला ---- ----	नदी ---- ----	आँख ---- ----
कुत्ता ---- ----	कला ---- ----	राखी ---- ----	दाल ---- ----
कपड़ा ---- ----	---- ----	---- ----	---- ----
---- ----	---- ----	---- ----	---- ----

इन शब्दों के अलग–अलग रूपों से वाक्य बनाओ

------------------------	------------------------
------------------------	------------------------
------------------------	------------------------
------------------------	------------------------

सुखनराम और चाचाजी का झगड़ा एक छोटी सी बात से शुरू हुआ था और फिर बढ़ता गया। क्या ऐसा होते हुए तुमने भी कहीं देखा है? क्या हुआ था? कैसे–कैसे बात बढ़ी? झगड़ा बंद कैसे हुआ? तुम्हें सब देखकर कैसा लग रहा था? याद करके यहाँ लिखो।